श्रीनेमिनाथ जिनपूजा

छंद लक्ष्मी तथा अर्द्धलक्ष्मीधरा।

जैतिजै जैतिजै जैतिजै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यौचैनकी।
श्री शिवानंद भौफंद निःकन्द, ध्यावै जिन्हें इन्द्र नागेन्द्र औ मैनकी।।
पर्मकल्यान के देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करी ऐनकी।
थापि हौ वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धताधार भौपारकूँ लेनकी।।

३/९
पीले चावल/लौंग क्षेपण करना

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता.....।। टेक।।

झारी से जल

निगम नदी कुश प्राशुक लीनौं, कंचनभृंग भराय।
मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय।।
दाता मोक्ष के, श्रीनेमिनाथ जिनराय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन जल

हरिचन्दनजुत कदलीनन्दन, कुंक्रम संग घसाय।
विघनतापनाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सफेद चावल

पुष्पराशि तुमजस सम उज्जल, तंदुल शुद्ध मंगाय।
अखय सौख्य भोगन के कारन, पुंज धरों गुनगाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।

पीले चावल

पुण्डरीक तृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधितलाय।
दर्प्पक मनमथभंजनकारन, जजहुं चरन लवलाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सफेद चिटकी

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मंगाय।
क्षुधावेदनी नास करनको, जजहुँ चरन उमगाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीली चिटकी

कनक दीप नवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि जजहुं चरन हुलसाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दशविध गंध बनाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय।
दशों बंध जारन के कारन खेवों तुमढ़िग लाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

सुरस वरन रसना मनभावन, पावन फल सु मंगाय।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुमपाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

जलफलआदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्ठम छितिके राज करनको जजों अंग वसु नाय।। दाता...

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

पाइता छंद

सित कातिक छट्ट अमंदा, गरभागम आनन्दकन्दा।
शचि सेय सिवापद आई, हम पूजत मनवचकाई ।।१ ।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सावन छट्ट अमन्दा, जनमें त्रिभुवन के चन्दा।
पितु समुद्र महासुख पायो, हम पूजत विघन नशायो ।।२ ।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां जन्म मंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तजि राजमती व्रत लीनों, सित सावन छट्ट प्रवीनो।

शिवनारि तबै हरषाई, हम पूजै पद शिरनाई।।३।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठयां तप कल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सित आश्विन एकम चूरे, चारों घाती अति कूरे।
लहि केवल महिमा सारा, हम पूजैं पद अष्टप्रकारा।।४।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल प्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० स्वाहा।

सितषाढ़ अष्टमी चूरे, चारों अघातिया कूरे।
शिव उर्ज्जयन्ततें पाई, हम पूजै ध्यान लगाई।।५।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

श्याम छबी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम।
शंख चिन्हपद में निरखि, पुनि पुनि करो प्रनाम।।१।।

पद्धरी छंद (१६ मात्रा लघ्वन्त)

जै जै जै नेमिक जिनिंद चन्द, पितु समुद देन आनन्दकन्द।।
शिवमात कुमुदमनमोददाय, भविवृन्द चकोर सुखी कराय।।२।।

जयदेव अपूरव मारतंड, तम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड।।
शिवतियमुखजलजविकाशनेश, नहिं रह्यौ सृष्टि में तम अशेष।।३।।

भविभीत कोक कीनों अशोक, शिवमग दरशायों शर्मथोक।।
जै जै जै जै तुम गुनगंभीर, तुम आगम निपुन पुनीत धीर।।४।।

तुम केवल जोति विराजमान, जै जै जै जै करुना निधान।।
तुम समवसरन में तत्वभेद, दरशायों जातें नशत खेद।।५।।

तित तुमकों हरि आनंदधार, पूजत भगतीजुत बहु प्रकार।।
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय, जै बल अनंत गुनवंतराय।।६।।

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश, जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष।।
जय कुमतिमतंगनको मृगेंद्र, जय मदनध्वांतकों रवि जिनेंद्र।।७।।

जय कृपासिंधु अविरुद्ध बुद्ध, जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध।।
जय जगजनमनरंजन महान, जय भवसागरमहं सुष्ठु यान।।८।।

तुव भगति करें ते धन्य जीव, ते पावै दिव शिवपद सदीव।।
तुमरो गुनदेव विविध प्रकार, गावत नित किन्नरकी जु नार।।९।।

वर भगतिमाहिं लवलीन होय, नाचै ताथेइ थेइ थेइ बहोय।।
तुम करुणासागर सृष्टिपाल, अब मोकों बेगि करो निहाल।।१०।।

मैं दुख अनंत वसुकरमजोग, भोगे संदीव नहिं और रोग।।
तुमको जगमें जान्यों दयाल, हो वीतराग गुनरतनमाल।।११।।

तातें शरना अब गही आय, प्रभु करो वेगि मेरी सहाय।।
यह विघन करम मम खंड खंड, मनवांछितकारज मंडमंड।।१२।।

संसारकष्ट चकचूर चूर, सहजानन्द मम उर पूर पूर।।
निजपर प्रकाशबुधि देई देई, तजिके विलंब सुधि लेई लेई।।१३।।

हम जांचत हैं यह बार बार, भवसागरतें मो तार तार।।
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख, तातें विनवों हे सुगुनमकुख।।१४।।

घतानंद

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं।।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं।।१५।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मालिनी (१६ वर्ण)

सुख धनयशसिद्धी पुत्रपौत्रादि वृद्धी। सकल मनसि सिद्धी, होतु है ताहि रिद्धी।।
जजत हरषधारी नेमि को जो अगारी। अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोच्छनारी।।१६।।

इत्याशीर्वादः ! पुष्पांजलि क्षिपेत्।